देवी अहिल्या जन व्याख्यानमाला

देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इन्दौर

आमंत्रण

मान्यवर,

देवी अहिल्या विश्वविद्यालय ने प्रतिमाह एक जनलोकप्रिय विषय पर व्याख्यान आयोजित करने का संकल्प लिया है, इसी के तहत तीसरा व्याख्यान आयोजित किया जा रहा है।

कार्यक्रम

विषय : 'मानव जाति का भविष्य उज्जवल है'
The future of mankind is bright

अध्यक्ष : **प्रोफेसर पी.के. चांदे**
पूर्व निदेशक, जी.एस.आई.टी.एस., इन्दौर

मुख्य अतिथि : **डॉ. नरेन्द्र धाकड़**
कुलपति, देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इन्दौर

मुख्य वक्ता : **डॉ. अपूर्व पौराणिक**
वरिष्ठ न्यूरोलॉजिस्ट,
महात्मा गांधी चिकित्सा महाविद्यालय एवं
महाराजा यशवंत राव चिकित्सालय, इन्दौर

दिनांक : **15 अक्टूबर 2016, शनिवार**

समय : **सायं 4.00 बजे**

स्थान : **देवी अहिल्या विश्वविद्यालय सभागृह**
तक्षशिला परिसर, खण्डवा रोड, इन्दौर

कृपया अवश्य पधारें।

सम्पर्क सूत्र
डॉ. सोनाली
मोबाईल : 94253 17435

भवदीय
कुल सचिव एवं
व्याख्यानमाला समिति

देवी अहिल्या जन व्याख्यानमाला
देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इन्दौर
PYRAMID MEDITATION
AND MUSIC
डॉ. नरेन्द्र कुमार धाकड़
Brahmarshi Patriji

देवी अहिल्या जन व्याख
देवी अहिल्या विश्वविद्यालय,

सिटी एंकर

वरिष्ठ पत्रकार-लेखक डॉ वेदप्रताप वेदिक ने शुक्रवार को एक कायक्रम म कहा-

गणतंत्र के मालिक की तरह व्यवहार करें आम लोग

सिटी रिपोर्टर • वरिष्ठ पत्रकार और स्तंभकार डॉ. वेदप्रताप वेदिक का कहना है कि सबसे पहले देश के आम आदमी को अपने आप को पहचानना होगा। उसे यह महसूस करना होगा कि वह इस गणतंत्र का मालिक है। किसी भी जनप्रतिनिधि से उसका व्यवहार गणतंत्र के मालिक की तरह होना चाहिए। जिस दिन आमलोगों में यह ज़िम्मेदारी के साथ यह मालिक-भाव आएगा, उसी दिन भ्रष्ट नौकरशाह और नेता आ आपके सामने टिक नहीं पाएंगे।

इसलिए लोकतंत्र को मजबूत करना है तो आमलोगों को नेताओं के मुकाबले अपनी जिम्मेदारी ज्यादा समझना चाहिए। यह बात उन्होंने स्कूल ऑफ कम्प्यूटर साइंस में देवी अहिल्या विश्वविद्यालय की जनव्याख्यानमाला के तहत शुक्रवार को कही। वे लोकतंत्र को मजबूत करने में आम लोगों की भूमिका पर बोल रहे थे।

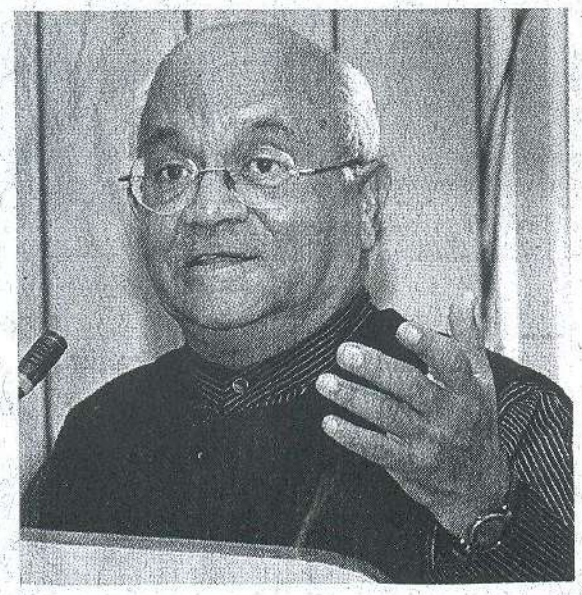

जहां राजनीतिक चेतना है, वहां लोकतंत्र है

उन्होंने कहा कि दुनिया में वहीं लोकतंत्र हैं जहां ज्ञान है, राजनीतिक चेतना है। जहां समाज में शांति और सदभावना है। हमें संविधान ने समान अधिकार दिया है, यहीं से लोकतंत्र की शुरुआत हुई। लेकिन यह दुर्भाग्यपूर्ण है कि आज हमारे राजनीतिक दल प्राइवेट लिमिटेड कम्पनियां बन गए हैं। लोकतंत्र को सशक्त बनाने के आम आदमी को 90% मतदान करना चाहिए।

अनिवार्य किया जाना चाहिए मतदान

हमारे देश में मतदान अनिवार्य कर दिया जाना चाहिए। मतदान ना करने पर जुर्माना लगाना चाहिए। हम पैसा, धर्म, नशा से ऊपर उठकर ही मतदान कर देश में परिवर्तन ला सकते हैं। आखिरी बात यह कि शाकाहार मनुष्य का आहार है, मांसाहार नहीं। मांसाहार को रोककर ही पशुओं की रक्षा करनी होगी। पूर्व न्यायाधीश एवं हिमाचल प्रदेश के पूर्व राज्यपाल वी.एस. कोकजे ने कहा कि लोकतंत्र को मजबूत करना जनता जनता कि ज़िम्मेदारी है। इसलिए लोगो का जागरुक होना जरूरी है। यूनिवर्सिटी के कुलपति डॉ. नरेन्द्र धाकड़ ने भी संबोधित किया।

विश्वविद्यालय में जन व्याख्यानमाला...

बड़ी समस्या का समाधान है स्टार्टअप

आईआईएम इंदौर के निदेशक ने दिया उद्बोधन

इंदौर @ पत्रिका. 'आज शिक्षा और स्किल डेवलपमेंट दोनों की आवश्यकता है। पहले जहां नौकरी नहीं करने वाले अपना बिज़नेस शुरू करते थे, वहीं आज बिजनेस एक इनोवेशन है। इनोवेशन समस्या समाधान के साथ नया विचार है, जिसे नए रूप से लागू कर लाभ भी प्राप्त किया जा सकता है।'

यह बात देवी अहिल्या विश्वविद्यालय की जन व्याख्यानमाला में भारतीय प्रबंध संस्थान, इंदौर के निदेशक प्रो. ऋषिकेश टी. कृष्णन ने 'स्टार्टअप : शुरुआत, अवसर एवं चुनौतियां' विषय पर कही। कार्यक्रम की दूसरी कड़ी में प्रो. उपेन्द्र धर ने बताया, 'स्टार्टअप आज के समय में बहुत ही प्रासंगिक विषय है। देश को रोजगार की जितनी आवश्यकता नहीं है, उससे अधिक रोजगार के अवसर देने वालों की आवश्यकता है। यह सभी एक प्रकार से चुनौती भरा है। टेक्नोलॉजी के बिना किसी विकास नहीं किया जा सकता। यह कार्यक्षमता को बढ़ाता है। निवेश के सही तरीके से अधिक से अधिक लाभ प्राप्त किया जा सकता है।'

एक छात्र ने सवाल किया कि अमूमन हर बड़ा स्टॉर्टअप ड्रॉप आउट यानी बीच में पढ़ाई छोड़ने वाले ही करते है। इस पर प्रो. कृष्णन से जवाब देते हुए कहा, 'जरूरी नहीं है कि ड्रॉप आउट अच्छे स्टार्ट अप करते है, बल्कि उनके पीछे काम करने वाले लोग काफी उच्च शिक्षित होते हैं। यदि अच्छे लक्ष्य को हासिल करना है तो उसके लिए पढ़ाई पूरी करना बेहद जरूरी है। कोई भी स्टार्टअप बगैर संघर्ष के कामयाब नहीं हो सकता।'

प्रो. कृष्णन के टिप्स

- स्टार्टअप शुरू करने से पूर्व एक चैलेंज बुक बनाएं।
- देखें, लोगों को किस चीज में समस्या है। घाटे की पहचान करें।
- लोगों दिनचर्या में चीजों की हानि से स्टार्टअप के लिए आइडिया लें।
- प्रयोग कम लागत के साथ करें।
- फेल हो तो कारण को जानें और फेरबदल कर फिर प्रयोग करें।
- स्टार्टअप में नवीनता और रचनात्मकता बने रहना जरूरी है।
- शुरुआत से ही फोकस और सहयोगी फाउंडर्स की पहचान भी जरूरी है।

सिखाया सबक

PATRIKA.COM/ENTERTAINMENT

PROGRAMME...

बढ़ रहा वसुधैव कुटुंबकम की धारणा पर भरोसा

न्यूरोलॉजिस्ट डॉ. अपूर्व पुराणिक का 'द फ्यूचर ऑफ मैनकाइंड इज ब्राइट' पर व्याख्यान

इंदौर • ह्यूमन ब्रेन के हर हिस्सा अलग तरह का काम करता है। कुछ हिस्से हिंसा की ओर तो कुछ संवेदना की ओर प्रेरित करते है। ऑक्सीटोक्सीन हार्मोन और मिरर न्यूरॉन के कारण एक-दूसरे पर भरोसा बढ़ रहा है। कुछ स्टडीज के नतीजे बताते हैं कि संवेदना वाले हिस्से का विकास ज्यादा हुआ है। इंसान में संवेदनशीलता बढ़ने से ही दुनिया का भरोसा वसुधैव कुटुंबकम की धारणा पर बढ़ रहा है।

डॉ. पुराणिक

द फ्यूचर ऑफ मैनकाइंड इन ब्राइड (मानव जाति का भविष्य उज्जवल है) विषय पर हुए व्याख्यान में न्यूरोलॉजिस्ट डॉ. अपूर्व पुराणिक ने कई उदाहरणों और रिसर्च के आधार पर आने वाले समय को बेहतर बताया। वे शनिवार को डीएवीवी की जनव्याख्यानमाला में संबोधित कर रहे थे। डॉ. पुराणिक ने बताया, 'विकासशील देशों में तेजी से प्रदूषण बढ़ रहा है, लेकिन विकसित देशों में पर्यावरण सुधर है। हिंसा के आंकड़े भी घटते जा रहे है।'

डॉ. पुराणिक ने कहा, 'अब अमीर होना खुश होने की गारंटी नहीं है। इसलिए अब हैप्पीनेस की बात की जाने लगी है। सुविधाएं हमारे जीवन को बहुत आसान बनाती जा रही है, लेकिन हैप्पीनेस के लिए अब बैक टू नैचर जैसी बातें हो रही है। उन्होंने कहा, 'टेक्नोलॉजी का फायदा शुरुआत में समझ नहीं आता। इसलिए इसका विरोध शुरू हो जाता है।' कुलपति प्रो. नरेंद्र धाकड़ ने भी टेक्नोलॉजी के कारण कई काम आसान होने व भविष्य में और सुविधाएं बढ़ने की बात कही। संचालन प्रो. यामिनी करमरकर ने किया।

100 रुपए देना होगा।

देअविवि में जन व्याख्यानमाला प्रारंभ- बोले डॉ. वैदिक

भ्रष्टाचार से निपटने में न रिश्वत देनी चाहिए और न लेनी चाहिए

(नगर प्रतिनिधि)

इंदौर। भ्रष्टाचार से निपटने में न रिश्वत देनी चाहिए और न लेनी चाहिए। पूर्णत: नशाबंदी में आम आदमी की गहरी भूमिका है। हर व्यक्ति को कम से कम अपने हस्ताक्षर तो हिंदी में ही करने चाहिए और इसको एक आंदोलन के रूप में आगे बढ़ाना चाहिए। शाकाहार अपनाकर जीवन को बेहतर बनाया जा सकता है इस पर गंभीरता से विचार करना चाहिए।

देवी अहिल्या जन व्याख्यानमाला श्रृंखला का शुभारंभ करते हुए यह बात वरिष्ठ पत्रकार एवं चिंतक डॉ. वेदप्रताप वैदिक ने कही। देअविवि के तक्षशिला परिसर स्थित स्कूल ऑफ कम्प्यूटर साइंस एंड आईटी के सभागृह में शुक्रवार की शाम को 'लोकतंत्र के सशक्तिकरण में आम नागरिक की सहभागिता' विषय पर चिंतक डॉ. वैदिक प्रमुख वक्ता के रूप में उपस्थित हुए। आपने यह भी कहा कि आम आदमी की भूमिका कर्त्तव्यों के साथ समझनी होगी। आपने वोट का सही इस्तेमाल करने के दायित्व के प्रति भी चेताया।

कार्यक्रम के अध्यक्ष पूर्व न्यायधीश एवं राज्यपाल (हिमाचल प्रदेश) वी.एस. कोकजे थे। श्री कोकजे ने कहा कि आम आदमी को जनप्रतिनिधियों से अपनी अपेक्षाएं उचित एवं सीमित रखनी चाहिए। लोकतंत्र में जन प्रतिनिधि की बड़ी जिम्मेदारी होती है। कार्यक्रम में कुलपति प्रो. नरेंद्र कुमार धाकड़ ने विश्वविद्यालय की ओर से इस श्रृंखला को प्रारम्भ करने की आवश्यकता की जानकारी दी। डॉ. वैदिक द्वारा प्रबुद्धजनों प्रश्नों के उत्तर भी दिए गए। कार्यक्रम में कार्यपरिषद् की सदस्य श्रीमती जमीला जालीवाला भी मंच पर उपस्थित थीं। आभार प्रदर्शन स्कूल ऑफ जर्नलिज्म की विभागाध्यक्ष डॉ. सोनाली नरगुंदे ने किया।

यूनिवर्सिटी ऑडिटोरियम में न्यूरोलॉजिस्ट डॉ. अपूर्व पौराणिक ने कहा

दुनिया हमेशा अच्छे और बेहतरी के लिए बदलती रहती है

• डॉ. अपूर्व पौराणिक

CTURE

ी रिपोर्टर • निराशा कुछ जीवियों का स्थायी भाव है। ावादियों का यही सोच है कि यकाल, भूतकाल का ही वृहत प है। उसी की निरंतरता है न ऐसा नहीं होता। दुनिया हमेशा और बेहतरी के लिए बदलती ी मानव जाति एक सामूहिक है, जो लगातार, हर युग में ाओं को हल करती जाती है। लेकिन और नई समस्याएं आती है और फिर हल कर ली जाती हैं। यह चक्र चलता रहता है। प्रत्येक वृत्त, उसी बिंदु पर नहीं लौटता, एक पायदान ऊपर लौटता है। यही उम्मीद है और इसी उम्मीद में मानवजाति का भविष्य उज्जवल है। यह बात वरिष्ठ न्यूरोलॉजिस्ट डॉ. अपूर्व पौराणिक ने कही। वे डीएवीवी की जनव्याख्यानमाला के तहत 'मानव जाति का भविष्य उज्ज्वल है' विषय पर बोल रहे थे।

शहरों में उम्मीदें हैं, भविष्य है

उन्होंने कहा कि हर पीढ़ी के बुद्धिजीवी भूल जाते हैं कि पुरानी पीढ़ी जिन चिंताओं से दुबली हुई जा रही थी वे समस्याएं हल की जा चुकी हैं। ऐसे में मनव की मेधा, जिजीविषा, उद्यमशीलता, क्रांतिकारी अवधारणाओं को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता। इतिहास साक्षी है, मोहनजो दारो से मेनहट्टन तक उन्नत व सफल सभ्यताएं शहरों में ही पनपी हैं। शहरों में उम्मीदें हैं, भविष्य है, किस्मत है, स्वतंत्रता है, विविधता और गतिमानता है।

अध्यक्षता प्रो. पी.के चांदे ने की। कुलपति डॉ नरेंद्र धाकड़ मुख्य अतिथि थे। आभार सोनाली नरगुंदे ने माना।

जन-व्याख्यानमाला

गूगल ने किया जागृत

यंग रिपोर्टर • इंदौर
editor@peoplessamachar.co.in

देवी अहिल्या विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित जन-व्याख्यानमाला की तीसरी कड़ी के मुख्य वक्ता प्रसिद्ध न्यूरोलॉजिस्ट डॉ. अपूर्व पौराणिक रहे। उन्होंने 'मानव जाति का भविष्य उज्ज्वल है' विषय पर अपने विचार रखे। उन्होंने कहा- वातावरण की समस्या विकराल समस्या है। विकासशील देशों में प्रदूषण बढ़ रहा है, लेकिन विकसित देशों में वातावरण शुद्ध है। मनुष्य की औसत आयु भी बढ़ रही है। एचआईवी एड्स से होने वाली मौतों की संख्या भी कम होने लगी है। हिंसा में भी कमी हुई है, लेकिन हमारी सहनशीलता में कमी आई है। शांतिकरण की प्रक्रिया आज से पांच हजार वर्ष पूर्व शुरू हुई थी। सभ्यताकरण का दौर दो हजार वर्ष का है। इसके बाद पुनर्जागरण का युग शुरू हुआ। द्वितीय विश्व युद्ध के बाद से अधिकारों की बात की जाने लगी। मृत्युदंड की दर भी कम हुई है। प्रजातांत्रिक देशों की संख्या में भी बढ़ोतरी हुई है। गुगल ने लोगों को जागृत करने के लिए कई किताबों को ऑन लाइन किया।

डॉ. पौराणिक ने कहा- स्त्रियों को मारना 1950 तक एक सामान्य बात थी, लेकिन अब महिलाओं के खिलाफ अत्याचार करना कानूनन अपराध है। आज हम स्त्री अधिकारों को लेकर सजग हैं। बच्चों को लेकर भी हम अधिक संवेदनशील हुए हैं।

संवेदना का हुआ विकास

डॉ. पौराणिक ने न्यूरोलॉजी के संदर्भ में बताते हुए समझाया कि मनुष्य के मस्तिष्क के कई भाग होते हैं, जिसमें कुछ हिंसा और कुछ संवेदना के लिए प्रेरित करते हैं। पिछले कुछ सालों में न्यूरोलॉजी की स्टडी के दौरान यह पाया गया कि मनुष्य के मस्तिष्क के उस हिस्से में विकास हुआ है, जिसमें हमें संवेदना के लिए प्रेरित किया जाता है, इसीलिए विश्व में वसुधैव कटुम्बकम की धारणा पर विश्वास बढ़ा है। प्राकृतिक आपदाओं पर अपने विचार अभिव्यक्त करते हुए उन्होंने बताया कि प्राकृतिक आपदाओं से होने वाली मृत्यु में भी कमी आई है।

उन्होंने बताया- अब अमीर होना खुश होने की गारंटी नहीं है, इसीलिए हैप्पीनेस की बात की जाने लगी है। बैक टू नेचर कहना आसान है, लेकिन सुविधाएं हमारे जीवन को आसान बना रही हैं। पहले जहां हमारी औसत आयु कम थी, वहीं अब बढ़ गई है। मानव जाति में कई बड़े विनाश हुए हैं। कैंसर, नाभकीय युद्ध, रेडियोधर्मिता, अकाल और जनसंख्या, संसाधनों की कमी, शुद्ध वायु आदि प्रमुख हैं, लेकिन फिर भी जीवन बेहतर हुआ है। कई घोषणाएं विफल हुई हैं। 1970 के दशक में अमेरिकी पत्रिका 'लाइफ' ने लिखा था कि लोगों को मॉस्क पहनकर निकलना पड़ेगा। कुछ पत्रिकाओं ने घोषणा की थी कि रेडिएशन से लोगों की मृत्यु हो जाएगी। अनेक जन्मजात विकृतियां बढ़ जाएंगी, लेकिन स्थितियां सामान्य हैं। एक समय में दुनिया की जनसंख्या स्थिर हो जाएगी और खाद्यान्नों का उत्पादन भी बढ़ रहा है। तकनीकों के कारण पृथ्वी का जीवन भी बढ़ रहा है। ऊर्जा की निपुणता भी बढ़ती जा रही है। ईंधन भी बढ़ रहा है। ऊर्जा का हम अधिक बेहतर तरीके से उपयोग कर रहे हैं। जेनेटिक इंजीनियरिंग ने जीवन को और भी आसान बनाया है। अच्छे नियम, प्रजातंत्र, अधिकार, प्रॉपर्टी आदि हमारे जीवन को और भी बेहतर बना सकते हैं। हमें मनुष्य की सांस्कृतिक और बौद्धिक प्रगति के विषय में विचार करना चाहिए। जिन राष्ट्रों ने संरक्षणवाद को बढ़ावा दिया है, उनका विकास रूक-सा गया है। जितने भी समाज विकसित हुए हैं, उनमें पहले आर्थिक समृद्धि हुई है, फिर बौद्धिक समृद्धि आई है। 21वीं शताब्दी और भी प्रजातांत्रिक होगी।

कार्यक्रम के दूसरे सत्र में प्रोफेसर पीके चांदे व कुलपति डॉ. नरेंद्र धाकड़ ने विषय पर अपने विचार व्यक्त किए।

छात्र विनर

मानव जाति का भविष्य उज्ज्वल है

इन्दौर।

देवी अहिल्या विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित जनव्याख्यानमाला की तीसरी कड़ी के मुख्य वक्ता थे प्रसिद्ध न्यूरोलॉजिस्ट डॉ अपूर्व पौराणिक । उन्होंने ''मानव जाति का भविष्य उज्जवल है'' विषय पर अपने विचार रखे। उन्होंने कहा वातावरण की समस्या विकराल समस्या है। विकासशील देशों में प्रदूषण बढ़ रहा है लेकिन विकसित देशों में वातावरण शुद्ध है। मनुष्य की औसत आयु भी बढ़ रही है। एचआइवी एड्स से होने वाली मौतों की संख्या भी कम होने लगी है। हिंसा में भी कमी हुई है। लेकिन हमारी सहनशीलता में कमी आई है। शांतिकरण की प्रकिया आज से पांच हजार वर्ष पूर्व शुरू हुई थी। सभ्यताकरण का दौर दो हजार वर्ष का है। इसके बाद मुर्नजागरण का युग शुरू हुआ। द्वितीय विश्व युद्ध के बाद से अधिकारों की बात की जाने लगी। मृत्युदंड की दर भी कम हुई है। प्रजातांत्रिक देशों की संख्या में भी बढ़ोतरी हुई है। गुगल ने लोगों को जागृत करने के लिए कई किताबों को ऑनलाइन किया। स्त्रियों को मारना 1950 तक एक सामान्य बात थी लेकिन अब महिलाओं के खिलाफ अत्याचार करना कानूनन अपराध है। आज हम स्त्री अधिकारों को लेकर सजग है। बच्चों को लेकर भी हम अधिक संवेदनशील हुए हैं। डॉ. पौराणिक ने न्यूरोलॉजी के संदर्भ में बताते हुए समझाया कि मनुष्य के मस्तिष्क के कई भाग होते हैं। जिसमें कुछ हिंसा और कुछ संवेदना के लिए प्रेरित करते हैं। पिछले कुछ वर्षों में न्यूरोलॉजी की स्टडी के दौरान यह पाया गया कि मनुष्य के मस्तिष्क के उस हिस्से में विकास हुआ है जिसमें हमें संवेदना के लिए प्रेरित किया जाता है। इसीलिए विश्व में वसुधैव कटुम्बकम की धारणा पर विश्वास बढ़ा है। प्राकृतिक आपदाओं पर अपने विचार अभिव्यक्त करते हुए उन्होंने बताया कि प्राकृतिक आपदाओं से होने वाली मृत्यु में भी कमी आई है। उन्होंने बताया अब अमीर होना खुश होने की गारंटी नहीं है। इसीलिए हैप्पीनेस की बात की जाने लगी है। बैक टू नेचर कहना आसान है लेकिन सुविधाएं हमारे जीवन को आसान बना रही है। पहले जहां हमारी औसत आयु कम थी वही अब बढ़ गई है। मानव जाति में कई बड़े विनाश हुए हैं। कैंसर, नाभकीय युद्ध रेडियोधर्मिता, अकाल और जनसंख्या, संसाधनों की कमी, शुद्धवायु आदि प्रमुख है। लेकिन फिर भी जीवन बेहतर हुआ है। कई घोषणाएं विफल हुई हैं। 1970 के दशक में अमरीकी पत्रिका लाईफ ने लिखा था कि लोगों ने को मास्क पहनकर निकलेना पड़ेगा। कुछ पत्रिकाओं ने घोषणा की थी कि लोग रेडियेशन से लोगों की मृत्यु हो जाएगी। अनेक जन्मजात विकृतियां बढ़ जाएगी लेकिन स्थितियां सामान्य है।

एक समय में दुनिया की जनसंख्या स्थिर हो जाएगी और खाद्यान्नों का उत्पादन भी बढ़ रहा है। तकनीकों के कारण पृथ्वी का जीवन भी बढ़ रहा है। उर्जा की निपुणता भी बढ़ती जा रही है। ईधन भी बढ़ रहा है। उर्जा का हम अधिक बेहतर तरीके से उपयोग कर रहे हैं। जेनेटिक इंजीनियरिंग ने जीवन को और भी आसान बनाया है। चंद्रमा पर जाने पर लोगों ने उसका भी विरोध किया था लेकिन आज सैटेलाइट और उपग्रह पद्धति ने हमारे संचार को आसान बनाया है। टेक्नोलॉजी का उपयोग शुरूआत में समझ नहीं आता है। लेकिन बाद में उसकी उपयोगिता जीवन का अभिन्न हिस्सा बन जाती है।